बुद्धवर्ष २५४३, मार्गशीर्ष पूर्णिमा, २४ अक्तूबर, १९९९ वर्ष २९ अंक ४

धम्मवाणी

कतमे द्वे पुग्गला दुल्लभा लोकस्मिं? यो च पुब्बकारी, यो च कतञ्ञू कतवेदी – इमे द्वे पुग्गला दुल्लभा लोकस्मिं।

– दुकपुग्गलपञ्ञत्ति- ३९.

संसार में कौन से दो पुद्गल (व्यक्ति) दुर्लभ हैं?

वह जो पूर्व उपकारी है, बिना किसी अपेक्षा के उपकार की पहल करने वाला है और वह जो कृतज्ञ है, कृतवेदी है। ये दो व्यक्ति संसार में दुर्लभ हैं।

कृतज्ञतापूर्ण जन्मशताब्दी-वर्ष महोत्सव

भगवान बुद्ध ने कहा है कि मनुष्यों में ये दो सद्गुण दुर्लभ हैं – **कतञ्ञुता** अर्थात कृतज्ञता और **पुब्बकारिता** अर्थात बिना किसी अपेक्षा के उपकार करने की पहल। ये दोनों ऐसे सद्गुण हैं जो किसी भी धर्मप्रेमी व्यक्ति की धर्मपथ पर प्रगति मापने के लिए सही मापदंड हैं।

परंतु इन दोनों में कृतज्ञता अधिक महत्त्वपूर्ण है क्योंकि किसी संत द्वारा हमारे प्रति की गयी निःस्वार्थ सेवा को जब याद करते हैं और मानस में स्वभावतः उसके प्रति कृतज्ञता के भाव जागते हैं तब उसके आदर्श को जीवन में उतारने के लिए हम भी निःस्वार्थ सेवा की ओर उन्मुख होते हैं। यों निःस्वार्थ सेवाभाव अधिक पुष्ट होता है। इस प्रकार कृतज्ञता और निःस्वार्थ सेवा एक-दूसरे के सहायक बनते हैं, उपकारक बनते हैं।

म्यंमा (बर्मा) देश के प्रति हमारे मानस में विपुल कृतज्ञता के भाव जागते हैं। बुद्धवाणी को अपने मूल रूप में बर्मा के साथ-साथ श्रीलंका, थाईलैंड, कंबोडिया और लाओस ने सदियों तक सुरक्षित रखा, परंतु आशुफलदायिनी विपश्यना साधना केवल म्यंमा में ही सुरक्षित रखी गयी। अतः उस पावन देश के प्रति कृतज्ञ होना हमारे लिए स्वाभाविक है। इस कृतज्ञता से प्रेरणा पाकर हम भी विपश्यना साधना तथा भगवान की तत्संबंधित मूल वाणी को आगामी अनेक सदियों तक सुरक्षित रखने के लिए कृतसंकल्प हों और एतदर्थ जो आवश्यक हो उसे करें।

म्यंमा की जिस संत परंपरा ने विपश्यना विद्या को पीढ़ी-दर-पीढ़ी सदियों तक सुरक्षित रखा, उसके वर्तमान समय के जाज्वल्यमान सितारे सयाजी ऊ बा खिन के प्रति हमारी कृतज्ञता असीम होनी स्वाभाविक है। सारे विश्व में लाखों की संख्या में साधक-साधिकाओं ने जिस परंपरा द्वारा सुरक्षित विपश्यना विद्या का लाभ उठाया है वह सयाजी ऊ बा खिन की कृपा के फलस्वरूप ही हुआ है। भारत ने सदियों से जो अनमोल विद्या खो दी थी, वह पुनः भारत लौटे, यहां दृढ़तापूर्वक स्थापित हो और फिर सारे विश्व में फैलकर अमित लोककल्याण करे –ऐसा पावन धर्मसंवेग उनके करुण हृदय में जागा तो ही यह विद्या भारत आ सकी और विश्व में फैल सकी। अब तक जो भी इस विद्या से लाभान्वित हुए हैं उनके हृदय में जागी हुई कृतज्ञता, उनमें अपने उत्तरदायित्व की कर्तव्यनिष्ठा भी जगायेगी ही। निष्ठा यही कि यह विद्या करोड़ों अरबों लोगों के हित-सुख के लिए विश्व के कोने-कोने में फैले और अपने शुद्ध रूप में सदियों तक कायम रहे। कुछ एक कृतघ्न और अधार्मिक लोग इस विद्या का क ख ग सीख कर इसे अपनी आजीविका का साधन बनाने के लिए अथवा अपने संप्रदाय की बाड़े-बंदी को दृढ़ करने के लिए इसे तोड़-मरोड़ कर इसका दुरुपयोग करने में अभी से लग गये हैं और भविष्य में भी ऐसे लोग इस प्रकार का दुष्कर्म करते ही रहेंगे। परंतु जो-जो साधक-साधिकाएं कृतज्ञता का भाव लिए हुए धर्मनिष्ठ बने रहेंगे, वे भूल कर भी न इसकी मौलिक शुद्धता से छेड़छाड़ करेंगे, न इसे व्यवसाय बनायेंगे और न ही किसी संप्रदाय विशेष के पोषण का साधन बनाने का दुष्कृत करेंगे। वे इसकी परम परिशुद्ध और परम परिपूर्ण सार्वजनीन सर्वलोक हितकारिणी गरिमा को कदापि दूषित नहीं होने देंगे।

उन युगपुरुष सयाजी ऊ बा खिन की जन्मशताब्दी का यह पुनीत वर्ष हम सब के लिए अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। दो सहस्राब्दियों से भारत व विश्व से लुप्त हुई भगवती विपश्यना विद्या को लेकर जन्मशताब्दी का यह पावन वर्ष अगली सहस्राब्दी में प्रवेश कर रहा है। पिछले दो-तीन दशकों में यह कल्याणी विद्या केवल भारत की ही नहीं बल्कि विश्व भर की सभी परंपराओं द्वारा स्वीकृत हुई है। यह देख कर इस कथन में अतिशयोक्ति नहीं लगती कि अगली सहस्राब्दी निस्संदेह विपश्यना सहस्राब्दी होगी।

सचमुच यह अत्यंत प्रेरणा प्रदायक तथ्य है कि सयाजी के जन्मशताब्दी-वर्ष के पावन समारोह से इस विपश्यना सहस्राब्दी का

आरंभ हो रहा है। यह धर्म समारोह म्यंमा की पावन भूमि पर ९, १० और ११ जनवरी सन २०००, को धम्मजोति विपश्यना केंद्र, यांगो (रंगून) में मनाया जायगा।

म्यंमा की धर्मधरा को नमन करने के साथ-साथ हम वहां पूज्य गुरुदेव की पावन स्मृति में अपनी कृतज्ञताभरी श्रद्धांजलि अर्पित करेंगे।विश्व भर के सैंकड़ों विपश्यी साधक-साधिकाएं इस ऐतिहासिक तीर्थयात्रा में भाग लेने के लिए नितांत आतुर-उत्सुक हो उठे हैं।

इस महत्त्वपूर्ण धर्म समारोह में परम पूज्य गुरुदेव सयाजी ऊ बा खिन की असीम मंगल मैत्री से अभिषिक्त होकर हम सब इस शताब्दी वर्ष में उनके सम्मान स्वरूप निश्चित की गयी इन सभी लोक कल्याणकारी योजनाओं को पूरा कर सकने का दृढ़ संकल्प लेकर लौटेंगे और उसे यथार्थतः पूरा करेंगे।

१) विपश्यना के गंभीर साधक-साधिकाओं के हितार्थ शुद्ध धर्ममय आदर्श वातावरण में रह सकने के लिए धम्मगिरि, इगतपुरी के सन्निकट **सयाजी ऊ बा खिन विपश्यना ग्राम** की स्थापना।

२) साधक-साधिकाओं की उत्कृष्ट तपस्या के लिए २०, ३०, ४५, ६० और ९० दिनों के गंभीर सुदीर्घ शिविरों के संचालनार्थ धम्मगिरि के सन्निकट **धम्मतपोवन** की स्थापना।

३) पुरातन विपश्यना साहित्य के गहन शोधकार्य को गंभीर विश्व व्यापी रूप देने के लिए धम्मगिरि के ही सन्निकट पालि, प्राकृत, संस्कृत, हिंदी आदि भारतीय तथा बर्मी, सिंहली, थाई, कंबोडियन, चीनी, कोरियन, जापानी, तिब्बती और मंगोलियन आदि विदेशी भाषाओं के प्रशिक्षण के लिए एक आदर्श **अंतर्राष्ट्रीय विश्व विद्यापीठ** की स्थापना।

४) और सयाजी ऊ बा खिन के पावन स्मारक स्वरूप मुंबई नगर के गोराई द्वीप में **विपश्यना धर्मस्तूप** की स्थापना, जो कि भगवान बुद्ध के प्रामाणिक पावन शरीरधातु अवशेषों के सम्मानपूर्ण संनिधान के साथ-साथ आगामी सहस्राधिक वर्षों तक परम पूज्य सयाजी और इस विद्या निधि के संरक्षक ब्रह्मदेश (म्यंमा) के प्रति हमारी असीम कृतज्ञता का प्रकाशमान ऐतिहासिक दीपस्तंभ साबित होगा। इसमें एक साथ लगभग दस हजार विपश्यी साधक-साधिकाओं की एक दिवसीय सामूहिक साधना के लिए विशाल ध्यानागार होगा, जो कि तथागत के अस्थि अवशेषों की पावन तरंगों से सतत तरंगित रहेगा। इसके अतिरिक्त इस धर्मस्तूप के समीप कथन, श्रवण और दर्शन के संयुक्त आधुनिकतम उपकरणों से सुसम्पन्न एक अत्यंत प्रभावशालिनी अर्धवर्तुलाकार दीर्घा बनेगी, जिसके विभिन्न कक्षों में भगवान बुद्ध के जीवन की महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक घटनाएं और उनकी पावन विपश्यना विद्या से संबंधित जीवंत प्रदर्शनी का निर्माण होगा। इससे इस देश में तथा विश्व में भगवान बुद्ध और उनकी कल्याणी शिक्षा के संबंध में पिछले डेढ़-दो हजार वर्षों से जो पौराणिक भ्रांतियां फैली हैं, वे दूर होंगी तथा लोगों को ऐतिहासिक यथार्थ की जानकारी होगी। इससे अनेकों के मन में प्रेरणा जागेगी और वे सार्वजनीन विपश्यना विद्या की ओर आकर्षित होंगे तथा इसे ग्रहण कर कल्याणलाभी होंगे।

यद्यपि विशाल स्तूप निर्माण की करोड़ों की लागत वाली यह योजना दुष्कर प्रतीत होती है परंतु साधकों के अदम्य उत्साह को देखते हुए असंभव नहीं लगती। इतिहास प्रसिद्ध दानवीर श्रेष्ठी अनाथपिंडिक की भांति जिस शुद्ध धर्मचेतना से अपने उदार परिवार सहित एक श्रद्धालु विपश्यी साधक ने इस ऐतिहासिक धर्मस्तूप के निर्माण के लिए करोड़ों रुपयों की लागत की भूमि प्रदान की है और अपूर्व धर्मचेतना से विपश्यी साधक-साधिकाएं वृहद् साधना कक्ष में एक-एक साधक-साधिका के लिए फर्श-क्षेत्र की लागत के लिए दस-दस हजार रुपये, स्तूप के कलेवर की प्रत्येक १०० वर्गफिट की निर्मिति के लिए एक-एक लाख रुपयों का दान दे रहे हैं। इसके अतिरिक्त देश-विदेश के अनेक साधक अपनी-अपनी श्रद्धा और सामर्थ्य के अनुसार सैंकड़ों, हजारों और लाखों का दान दे रहे हैं। इनसे भी अधिक महानतापूर्ण दान उनका आ रहा है जो कि आर्थिक विपन्नता का जीवन जीने वाले विपश्यी श्रमजीवी सेवक-सेविकाएं हैं। वे अपने एक-एक दिवस के वेतन दान में दे रहे हैं। इसे देखते हुए भारत में विपश्यना के पुनर्स्थापन के प्रतीक स्वरूप इस कल्याणी स्तूप निर्माण-योजना के देर-सबेर परिपूर्ण होने में कोई संदेह नहीं रह जाता।

हम इन शिव संकल्पों को पूरा कर सकें ताकि यह मांगलिक विद्या आगामी २५०० वर्षों तक भारत तथा विश्व के दुखियारे लोगों को दुःखमुक्त करने में सहायिका बनी रहे। इस प्रकार हमारी कृतज्ञता सफलीभूत हो। इस कृतज्ञताज्ञापन से विश्व के अनेकानेक लोगों का यथार्थतः मंगल हो! यथार्थतः कल्याण हो!

कल्याण मित्र,
(सत्यनारायण गोयन्का)

परम श्रद्धेय गुरुदेव सयाजी ऊ बा खिन के जन्मशताब्दी-वर्ष महोत्सव पर धम्मजोति विपश्यना केंद्र, यांगों (रंगून), म्यंमा (बर्मा) में ९ से ११ जनवरी, २००० तक अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन

किसी भी विपश्यी साधक के मन में पूज्य गुरुदेव सयाजी ऊ बा खिन के प्रति कृतज्ञता का भाव जागना स्वाभाविक है। क्योंकि उन्होंने गहन करुणचित्त से मानव मात्र के कल्याण के लिए विपश्यना रूपी अनमोल धर्मरत्न बांटने का अत्यंत महत्त्वपूर्ण कार्य प्रतिपादित किया। उनकी तीव्र धर्मकामना थी कि भारत की यह विलुप्त हुई पुरातन अनमोल विद्या भारत में पुनः स्थापित हो और वहां से सारे विश्व में फैले।और गुरुदेव श्री गोयन्काजी के माध्यम से उन्होंने यही किया।

यह संगोष्ठी गुरुदेव सयाजी ऊ बा खिन के १००वें जन्म-जयंती-वर्ष महोत्सव के रूप में मनायी जा रही है, ताकि अपनी असीम कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए हम उनके सपनों को साकार करने के लिए कृतसंकल्प और कर्मनिष्ठ हों। उन दीर्घदर्शी गृहस्थ संत के प्रति हमारी यही सच्ची श्रद्धांजलि होगी। यद्यपि बुद्धवाणी म्यंमा के अतिरिक्त श्रीलंका, थाईलैंड, कंबोडिया और

लाओस में भी अपने शुद्धरूप में कायम रखी गयी, परंतु पटिपत्ति यानी 'विपश्यना' की व्यावहारिक विद्या केवल म्यंमा में ही ध्यानी संघपरंपरा के कारण जीवित रही। इसीलिए धम्मगिरि, इगतपुरी पर पर्याप्त सुविधा होते हुए भी पूज्य गोयन्काजी ने इस संगोष्ठी का आयोजन म्यंमा में ही करना आवश्यक समझा ताकि विश्व भर के विपश्यी साधक उस धर्म संरक्षक पावन क्षेत्र के प्रति भी अपनी भावभीनी कृतज्ञता प्रकट कर सकें। प्रसन्नता की बात है कि इस समाचार के फैलतेही पूरे विश्व भर से बड़ी संख्या में विपश्यी साधक इस संगोष्ठी में भाग लेने के लिए आतुर-उत्सुक हो उठे हैं।

इस तीर्थ-यात्रा का कार्यक्रम तथा इसके लिए उपलब्ध सुविधाएं :

अपनी साधना परिपुष्ट करना ही सयाजी के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी। इस निमित्त सभी साधकोंके लिए धम्मजोति केंद्रके अतिरिक्त श्वेडगोन पगोडा तथा एरावती नदी के परले तट पर स्थित पूज्य दादागुरु सयातैजी के विपश्यना केंद्र पर भी गुरुदेव श्री गोयन्काजी के साथ सामूहिक साधनाओं का आयोजन रखा गया है ताकि वहां की पावन तरंगों से लाभान्वित हो सकें। जो साधक चाहें उनके लिए उत्तरी म्यंमा के लगभग ९०० वर्ष पूर्व के विपश्यना ज्योतिधर परम पूज्य भदंत धम्मदस्सी (अशिं अरहन्) तथा १०० वर्ष पूर्व हुए परदादागुरु पूज्य लैडी सयाडो की पवित्र साधना स्थलियों के साथ-साथ कुछ एक अन्य महत्त्वपूर्ण धर्मस्थानों की तीर्थयात्रा का भी कार्यक्रम निश्चित किया गया है। जो साधक म्यंमा-दर्शन की इस धर्मयात्रा में भी सम्मिलित होना चाहें वे अपने आवेदन-पत्र में इसका स्पष्ट उल्लेख करें।

इन कार्यक्रमोंमें भाग लेने के लिए साधक अपने नाम-पते व आवेदन-पत्र शीघ्र से शीघ्र निम्न पते पर भिजवा दें –

ई-मेल = <sayagyiseminar@usa.net>

पत्राचार= श्री प्रेमजी सावला, द्वारा- विपश्यना विश्व विद्यापीठ, धम्मगिरि, इगतपुरी-४२२४०३.

साधकों की सुविधा के लिए कलकत्तेसे यांगो (रंगून) तक जाने-आने के लिए विमान की सुविधाएं इस प्रकार हैं –

इंडियन एयरलाइन –सप्ताह में दो दिन, बुधवार और शनिवार, सायं १७-३० तथा वापसी यांगो से कलकत्तागुरुवार और रविवार की प्रातः ४:२५। (संगोष्ठी में पहुँचने के लिए सुविधाजनक तिथियां ५ व ८ जनवरी)

अधिक जानकारी के लिए इन्टरनेट पर देखें-
www.vri.dhamma.org

अथवा धम्मगिरि पर संपर्क करें।

अन्य संपर्क : –

१) श्री रामनाथ शेनाय, मुंबई.
ई-मेल== <sayagyiseminar@usa.net>

२) श्रीमती वीणा अग्रवाल, मुंबई. फोनः०२२- ६३४३४०९, फोन-फैक्सः (९१) ०२२- ६३४०१९३.

हे महान!

कितनी-कितनी ऊंचाइयों को छू लिया – आपने
शब्द कहां हैं उसे कहने के लिए
अद्वितीय अतुलनीय, अनुपमेय कार्यों को
कोई कैसे अभिव्यक्त करे!
'विपश्यना' भारत की एक पुरातन साधना-पद्धति
जिसे भुला ही दिया था हमने
कितने सरल रूप में प्रस्तुत किया है आपने उसे।
* सत्य को नितांत शुद्ध रूप में अनुभव करने का
सीधा-सादा स्वाभाविक मार्ग
प्यासे, भटकते, जिज्ञासु जनों के लिए।
* न जात-पांत का बंधन
न भारतीय अभारतीय का भेद
न ऊंच-नीच की संकुचित दृष्टि
न धनी-निर्धन में अंतर।
* सब के साथ समान व्यवहार
सभी के लिए मुक्त द्वार।
* न प्रारंभ में कोई प्रवेश शुल्क
न अंत में कोई भेट-पूजा।
* दूध-फल-भोजन, रहने का प्रबंध
सब बिना कुछ लिए-दिए।
* कोई भी साधक वंचित न रह जाय धर्मलाभ से
अर्थाभाव के कारण।
कैसी करुणा, कैसी उदात्त भावना!
साधना जगत का एकमेव अप्रतिम उदाहरण!
विश्व के समस्त मानव-जाति के लिए अनूठा उपहार।

*****

शिविर पर शिविर लगते गये,
बन गये, बन रहे हैं अनेक तपोवन,
देश में विदेश में।
तांता लगा रहता है हर जगह शिविरार्थियों का,
तिहाड़ जेल में प्रतिमाह दो शिविर आयोजित।
दिल्ली में एक हजार पुलिस-कर्मी शिविर में सम्मिलित,
मुंबई में निर्माणाधीन है दस हजार साधकों के
एक साथ तपने की साधना-स्थली।
साकार हो रहा है यह सारा स्वप्न
जिसे सँजोये रखा था आपने प्रारंभ में।
कैसे किया, कैसे हुआ, यह सब!
क्या आश्चर्य नहीं होता आपको?
इसका मूल्यांकन अभी कोई कैसे करे,
भविष्य ही करेगा इसका सही मूल्यांकन,
इन आपके लोक-मंगल कार्यो से अभिभूत
मेरा हृदय –
उत्फुल्ल है, उल्लसित है, आह्लादित है,
मेरी कृतज्ञता, मेरा नमन स्वीकार करें!

– (रामसुख मंत्री, भू.पू. संपादक 'मधुसंचय', पुणे)

मंगल-मृत्यु

लगभग ८६ वर्ष की पकी हुई अवस्था में पूज्य गुरुजी की बड़ी बहन श्रीमती दुर्गीदेवी खेमका की मांगलिक शरीर-च्युति हुई। परम पूज्य गुरुदेव सयाजी ऊ बा खिन से विपश्यना सीख कर वह विगत ४० वर्षों से विपश्यना साधना का नियमित अभ्यास करती रही थी। कई महीनों से बढ़े हुए कैंसर रोग की रोगिणी होते हुए भी मृत्युपर्यंत शोक मुक्त ही रही। उसने अनेक दीर्घ शिविरों में भी तपस्या की थी इस कारण अंत समय तक नींद या पीड़ानिरोधक किसी दवा का उपयोग नहीं किया। कैंसर की असह्य पीड़ा को समतापूर्वक सहन करती रही। मृत्यु के समय पूज्य गुरुदेव व माताजी धम्मगिरि पर सतिपट्ठान शिविर ले रहे थे, परंतु परिवार के जो लोग उस समय उपस्थित थे उन सब को यह देख कर आश्चर्यजनक प्रसन्नता हुई कि इस तपस्विनी ने किस प्रकार अत्यंत शांत और प्रसन्नचित्त से अपने प्राण छोड़े। मृत्यु के पश्चात चेहरे पर एक अलौकिक आभा छा गयी जो कि शरीरदाह किये जाने तक कायम रही और इसी प्रकार शरीर की उष्णता भी। जीवन जीने की आदर्श कला में पकी हुई साधिका ऐसी ही कलापूर्ण आदर्श मृत्यु का वरण करती है और अन्य साधक-साधिकाओं के लिए प्रेरणा का स्रोत बनती है।

नए उत्तरदायित्व

1-2) Mr. Alain & Mrs Rachel Lepine, to serve **Dhamma Suttama**, Canada

नव नियुक्तियां

1) Ms Kazuko Kitamura, Japan   2) Dr. Shih Yu Fen, Taiwan
३) डॉ. रोहित सावला, बिडाडा (कच्छ) ४) श्रीमती कांता खद्दरिया, करसियांग
(भूल सुधार – श्री तलक्षी कक्का को पिछली बार भूल से श्रीमती तलक्षी कक्का लिख दिया गया था, जिसके लिए खेद है।)

बाल-शिविर शिक्षक

१) श्री दिनेशचंद्र गुप्ता, भरतपुर (राज.) २) कु. सरोज जावडे, धार (म.प्र.)
३) डॉ. (श्रीमती) रजनी पाटील, नाशिक

दूहा धरम रा

जळमभोम पर धरम की, जागी उजळी जोत।
रज-रज कण-कण मँह भर्‌यो, मंगल ओत परोत॥

धन-धन धरती धरम की, धन-धन बिरमा देस।
सुद्ध धरम पायो अठै, कटै करम का क्लेस॥

जळमभोम पर ही मिल्यो, गुरुवर संत सुजान।
सुद्ध धरम ऐसो दियो, हुयो परम कल्यान॥

गांठ्या ही गांठ्या बँधी, पढ पोथ्यां रो ग्यान।
आखर आखर सुलझग्यो, सद्गुरु मिल्यो सुजान॥

हाथ न सूझै हाथ नै, घोर काळ अंध्यार।
दिवळो चसग्यो धरम रो, गुरुवर रो उपकार॥

धरम रतन अरजित कर्‌यो, मां बिरमा री गोद।
इब जन-जन नै बांटता, मन मावै ना मोद॥

मेसर्स गो गो गारमेंट्स
३१ -४२, भांगवाड़ी शॉपिंग आर्केड,
१ला माला, कालबादेवी रोड, मुंबई - ४००००२.
☎ २०५०४१४
की मंगल कामनाओं सहित

दोहे धर्म के

कैसी सुखद सुहावनी, मां बरमा की गोद।
इस गोदी में ही मिला, बोधि धर्म का मोद॥

शुद्ध धर्म ऐसा जगा, राग जगे ना द्वेष।
मन ऐसा निर्मल हुआ, रहा न क्लेश लवलेश॥

दुखदायी भवचक्र में, बीते जनम अनेक।
धन्य! धन्य! दुखमुक्तिहित, पाया बुद्ध विवेक॥

धन्य! धन्य! गुरुवर मिले, करुणा के भंडार।
अंधे को आंखें मिली, सत्य धरम का सार॥

धन्यभाग गुरुवर मिले, जिनका प्रबल प्रताप॥
जन-जन मन जागे धरम, दूर होय भवताप॥

श्वेडगोन मंदिर भला, बरमा भला सुदेश।
भली विपश्यना साधना, भले बुद्ध उपदेश॥

मेसर्स मोतीलाल बनारसीदास
• महालक्ष्मी मंदिर लेन, ८ महालक्ष्मी चैंबर्स, २२ वार्डन रोड, मुंबई-४०००२६.
☎-४९२३५२६, • सनस प्लाजा, शॉप ११-१३, १३०२, सुभाष नगर, पुणे-४११००२.
☎-४८६१९०, •दिल्ली-२९११९८५,• पटना-६७१४४२, •वाराणसी- ३५२३३१,
•बैंगलोर- २२१५३८९,• चेन्नई- ४९८२३१५, •कलकत्ता-२४३४८७४
की मंगल कामनाओं सहित

'विपश्यना विशोधन विन्यास' के लिए प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादकः राम प्रताप यादव, धम्मगिरि, इगतपुरी-४२२४०३, दूरभाष : (०२५५३) ८४०८६, ८४०७६.
मुद्रण स्थान : अक्षर चित्र प्रिंटिंग प्रेस, ६९- बी रोड, सातपुर, नाशिक-४२२००७. **बुद्धवर्ष २५४३, मार्गशीर्ष पूर्णिमा, २४ अक्तूबर, १९९९**

वार्षिक शुल्क रु. २०/-, विदेश में US $ 10   **'विपश्यना' रजि. नं. १९१५६/७१.**   Bulk Mail Postes Paid,
आजीवन शुल्क रु. २५०/-, " US $ 100   Postal Reg. Number NSM 16/99   Permit number 18/99

If not deliverd please return to:-

विपश्यना विशोधन विन्यास
धम्मगिरि, इगतपुरी - ४२२४०३
जिला-नाशिक, महाराष्ट्र भारत
दूरभाष : (०२५५३) ८४०७६
फैक्स: (०२५५३) ८४१७६
Website: www.vri.dhamma.org